भगीरथ

लघुकथा और जनपक्षधरता

आधुनिक हिंदी लघुकथा का वितान बहुत बड़ा हो गया है समाज के हर पहलू को अपनी रचनात्मकता में समेटने की कोशिश की है निश्चित ही इसके लिए रचनाकार बधाई के पात्र है। फिर भी बहुत से विषय छूटते जा रहे हैं। हो सकता है हमारे अनुभवों का दायरा सीमित हो, हमारे अध्ययन की सीमाएं हो या हमारी वर्गीय सीमाएं हो।

किसी भी विधा के लिए सब कुछ समेटना संभव नहीं है, हमारी नजर हमेशा दुखती रग पर जाती है जो हमें विचलित करती है, दूसरे हमारे समय के सवालों और मुद्दों पर दृष्टि जाना स्वाभाविक है। लेकिन इसे अभिव्यक्त करने के लिए विशद अध्ययन की जरुरत है बस यहीं आकर हम कमजोर पड जाते हैं हमारी तार्किक और विश्लेष्णात्मक शक्ति निर्बल हो जाती है।

तब हम भाववादी या आदर्शवादी दृष्टिकोण से रचना को सर अंजाम दे देते हैं।

अभी योगराज प्रभाकर की लघुकथा 'एक अफगानी की डायरी' पढ़ रहा था अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर शायद यह अकेली रचना है जो ध्यान खींचती है लेखन का बड़ा दायरा अस्तित्ववादी चिंतन, परिवार, रिश्ते, वृद्धजन की स्थिति, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के पतन, बढ़ता हुए स्वार्थ और अलगाव, जैसे महत्वपूर्ण विषय लघुकथा में व्यक्त हुए हैं. साहित्य स्वयं में प्रतिपक्ष है इसलिए प्रतिरोधात्मक रचनाओं की अधिक आवश्यकता है। अशोक भाटिया की सम्पादित 'प्रतिरोध' इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है।

लघुकथा की ताकत बहुत बड़ी है पल्लवी त्रिवेदी की लघुकथा 'पति परमेश्वर' नेट पर वायरल हो रही है आउट ऑफ़ द बॉक्स थिंकिंग है हास्य और तंज है लोक में लोकप्रिय होने के तत्व है इस कथा ने आधुनिक लोक कथा का स्वरूप ग्रहण कर लिया है असगर वजाहत की कई लघुकथाओं में यह ताकत है।

सर्वग्रासी राजनीति आज धन उगाहने और सत्ता हथियाने का जरिया बनी हुई है और जनसेवा का इससे दूर दूर तक रिश्ता नहीं है। इस सन्दर्भ में तथ्यपरक व्यंग्यात्मक के साथ तार्किक और विश्लेषणात्मक लेखन की आवश्यकता है।

लघुकथा आरम्भ से ही जनपक्षीय विधा रही है और समाज में अन्धविश्वास, पाखण्ड, विसंगतियां और विरोधाभास को अपनी जद में लेती रही है। मानवतावाद, स्वतंत्रता और समानता के साथ राजनीति में धर्म निरपेक्षता की पक्षधर रही है। ये मूल्य संवैधानिक मूल्य है जिन्हें सचेतन कलमकारों को बड़ी तल्खी से अपनी रचनाओं में उकेरने की जरुरत है। इस दौर में जब धर्म का राजनीति में दखल बढ़ता जा रहा है राजनीति मुस्लिम और इसाई विरोधी हो गई है कई रचनाकार मित्र इस तरह की राजनीति के पक्षधर होते दिख रहे हैं या

उससे सहानुभूति रख रहे हैं। उन्हें सचेत होने की जरुरत है, अतः लघुकथा के साहित्य क्षेत्र में भी विचारधारात्मक बहस की जरुरत है। और अपने दुराग्रहों से मुक्त होने की जरुरत है धर्म-संस्कृति अतीत के आत्म गौरव और धार्मिक राष्ट्रवाद के चोले में हमारे समक्ष आती है और हम अभिभूत हो उठते है। धर्म-संस्कृति में सब कुछ उजला-उजला नहीं है। अपने विवेक से उजाले पक्ष को अंगीकार करें और अँधेरे पक्ष को रिजेक्ट करें। यह हमारा लेखकीय दायित्व है। जिस तरह से कविताएँ आज के दौर में हस्तक्षेप कर रही है वैसा लघुकथा साहित्य कर सके तो एक उपलब्धि होगी।

धार्मिक राष्ट्रवाद हिन्दू को देश भक्त मानता है और अन्य धर्म के लोग को राष्ट्रद्रोही मानता है। इस तरह उनके स्वतंत्रता आन्दोलन में किये गए बलिदान को नकारता है। साँझा संस्कृति की जगह हिन्दू संस्कृति पर बल देता है और इसके लिए इतिहास में मनचाहा परिवर्तन करता है।

जब साहित्य के विशेष कालखण्ड का आकलन किया जायगा तब ये देखा जाएगा कि उस समय के महत्वपूर्ण मुद्दों को रचनाओं में संबोधित किया गया था या नहीं। इस सन्दर्भ में हरभगवान चावला के लेखन को देखा जा सकता है।

धर्म निरपेक्षता मानवता का ही विस्तार है, धर्म निरपेक्ष हुए बिना मानवीय नहीं हो सकते। अगर आप धार्मिक राष्ट्रवादी है तो अन्य धर्मों के प्रति आप असहिष्णु होंगे, हिंसक होंगे उन्हें नेस्तनाबूद करने के षड्यंत्र रचेंगे। धार्मिक होते हुए भी धर्म निरपेक्ष हो सकते है, इसमें कोई अड़चन नहीं है इस सन्दर्भ में कमल चोपड़ा और बलराम अग्रवाल की कई कथाओं को देखा जा सकता है।

हमारे संवैधानिक मूल्यों –स्वतंत्रता, समानता, न्याय और धर्म निरपेक्षता पर संकट गहरा रहा है और सिस्टेमिक तरीके से संस्थाओं को नष्ट किया जा रहा है। संसद और संसदीय संस्थाओं का अवमूल्यन हो रहा है, रचनाकारों को इस अवमूल्यन को सच्चाई के साथ अपनी रचनाओं में उकेरने की जरुरत है।

समय के इस दौर में जब धर्म का राजनीति में दखल बढ़ता जा रहा है और राजनीति मुस्लिम तथा इसाई विरोधी हो गई है। तब कई रचनाकार मित्र इस तरह की राजनीति के पक्षधर होते दिख रहे हैं या उससे सहानुभूति रख रहे हैं। उन्हें सचेत होने और अपने दुराग्रहों से मुक्त होने की जरुरत है। मैं महसूस करता हूँ कि लघुकथा के साहित्य क्षेत्र में वैचारिक बहस की आवश्यकता है और इसके लिए साहित्य से इतर क्षेत्रों के विद्वानों को आमंत्रित कर उनसे विचार विमर्श कर सकते है।